Course --M.A ,Education,part -2

Paper -11th, Educational Administrative Practice

Prepared by -Dr Meena Kumari

Topic -- school organisation

विद्यालय संगठन

(1) प्रस्तावना --- शिक्षा की नींव विद्यालय पर ही आधारित होती है ।किसी भी व्यक्ति की शिक्षा कितनी सफल होगी उसकी बुनियाद विद्यालय में ही डाली जाती है। विद्यालय एक महत्वपूर्ण संगठन है जिसमें मानवीय संसाधन तथा भौतिक संसाधन का समन्वय होता है। संगठन का एक निश्चित उद्देश्य होता है तथा यहां सहकारी मानवीय क्रियाएं योजनाबद्ध तरीके से की जाती है।शिक्षा को हासिल करना तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से विद्यालय संगठन बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है। विद्यालय संगठन की संरचना, प्रक्रिया तथा भूमिकाएं बहुत व्यापक है। किसी भी संगठन का उद्देश्य होता है एक सामूहिक दायित्व के प्रति उत्तरदायी होना।

(2)विद्यालय संगठन की अवधारणा --- विद्यालय संगठन का अर्थ होता है विद्यालय की संपूर्ण व्यवस्था में सक्रिय रूप से योगदान देने वाले मानवीय और भौतिक संसाधनों के सामूहिक रूप से तथा समन्वय से होता है । विद्यालय संगठन दो शब्दों से बना हुआ है पहला विद्यालय और दूसरा संगठन। विद्यालय ईंट, पत्थर ,सीमेंट इत्यादि से बना होता है। जिस प्रकार ईटा, गिट्टी सीमेंट को जोड़कर विद्यालय का विशाल भवन तैयार किया जाता है उसी प्रकार विद्यालय के संचालन के लिए प्रशासक ,प्रबंधक ,प्रधानाचार्य ,शिक्षक ,कर्मचारी छात्र तथा समुदाय का संगठित योगदान होता है ।संगठन से किसी कार्य के प्रति समर्पित लोगों के समूह से होता है जो परस्पर स्नेह, प्रेम, सहयोग तथा सामंजस्य से कार्यों को तथा वांछित लक्ष्य को प्राप्त करते हैं ।विद्यालय संगठन की अवधारणा सामूहिकता तथा सामुदायिकता की पृष्ठभूमि पर आधारित है ।विद्यालय संगठन की बुनियाद, विद्यालय में सक्रिय योगदान देने वाले मानवीय तथा भौतिक तत्वों के सम्यक उपयोग पर निर्भर करता है। विद्यालय संगठन का मूल विद्यालय का प्रबंधन, विद्यालय का प्रशासन ,भौतिक संसाधनों का सही प्रयोग ,उत्तरदायित्व तथा जवाबदेही इत्यादि समाहित होते हैं ।अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालय संगठन का अर्थ है किसी विशिष्ट उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एकत्रित किए गए व्यक्तियों तथा भौतिक संसाधनों का समन्वित रूप से है जो अधिकतम लक्ष्यों को हासिल करने की कोशिश करते हैं।

(3) विद्यालय संगठन का महत्व -- विद्यालय समाज का आईना होता है। किसी समाज के नौनिहालों का भविष्य विद्यालय में निकाला सजाया और संवारा जाता है ।इसलिए विद्यालय का उत्तरदायित्व समाज के प्रति अत्यधिक होता है। विद्यालय अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाहन ठीक ढंग से करने के लिए अपने संगठनात्मक प्रारूप को चुस्त-दुरुस्त बनाता है ।विद्यालय संगठन की मजबूती से ही बालकों के सर्वांगीण विकास की पृष्ठभूमि तैयार होती है ।आंतरिक शक्तियों के विकास के साथ-साथ बाह्य शक्तियों के विकास हेतु विद्यालय संगठन विशेष क्रियाओं

और कार्यक्रमों का आयोजन करता है। विद्यालय संगठन की महत्व बालक के व्यक्तित्व विकास के दृष्टिकोण से जहां महत्वपूर्ण है वहीं दूसरी ओर समाज और राष्ट्र हित की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। विद्यालय संगठन की मजबूती से समाज की परंपराएं ,मूल्य ,दृष्टिकोण ,विश्वास , एवं मान्यताएं प्रचलित तथा विस्तारित होती है। सांस्कृतिक विस्तार में भी स्थायित्व आता है।अतः विद्यालय संगठन का नियोजन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि विद्यालय, समाज और समुदाय के केंद्र के रूप में विकसित हो ।विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं एवं सामाजिक जीवन के विविधताओं को जाने समझे तथा सीख सकें। प्रत्येक राष्ट्र का भविष्य विद्यालय पर ही आधारित होता है। इसी कारण कोठारी आयोग ने कहा था कि भारत के भाग्य का निर्माता विद्यालय की कक्षा में अध्ययनरत छात्रों पर निर्भर है ।इससे स्पष्ट होता है कि नीतियों योजनाओं को जीतना ही अधिक ध्यान में रखकर विद्यालय संगठन बनाया जाता है उतना ही उसके लिए आज कुशल मानव शक्ति का विकास करना भी आवश्यक है। राष्ट्र का विकास और खुशहाली का मार्ग प्रशस्त विद्यालय के द्वारा होता है। अतः विद्यालय संगठन का महत्व छात्रों के साथ, समाज, समुदाय तथा राष्ट्र के लिए भी बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।

(4) विद्यालय संगठन की विशेषताएं ---- विद्यालय संगठन की विशेषताओं को हम निम्नलिखित प्रकार से दिख ला सकते हैं:----

- निश्चित उद्देश्य -- प्रत्येक विद्यालय संगठन की स्थापना कुछ विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाती है! संगठन की संरचना उद्देश्यों के अनुसार ही होता है !संस्था के उद्देश्य संगठन संरचना को प्रभावित करते हैं !अतः संगठन के उद्देश्यों को निर्माण करने के पश्चात संगठन के सभी क्रियाशील ईकाइयों के उद्देश्यों का निर्धारण करना चाहिए।

- सक्रिय एवं विकासशील --- विद्यालय संगठन की एक मुख्य विशेषता इस संगठन का सक्रिय और विकासशील होना है। प्रत्येक दिन नए नए प्रयोग किए जाते हैं तथा उद्देश्य की तरफ एक कदम बढ़ते जाते हैं। उदाहरण- स्वरुप शिक्षकों का प्रशिक्षण कर्मचारियों का प्रशिक्षण तथा सरकार के तरफ से भी नवाचार योजनाएं इत्यादि।

- परिवर्तनशील प्रकृति-- विद्यालय संगठन का स्वरूप परस्थिति तथा आवश्यकता के अनुसार बदलता रहता है। अतः इसकी प्रकृति परिवर्तनशील होती है ।

- प्रबंधन तंत्र-- विद्यालय प्रबंधन तंत्र की तरह कार्य करता है। संस्था के प्रत्येक विभाग का प्रबंधन तथा विकास संस्था के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है और संपूर्ण संगठन संस्था के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करने में सहायक होता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए संस्था में प्रबंधन तथा उचित साधनों की व्यवस्था की जाती है तथा इन के मध्य कार्यों का विभाजन किया जाता है ।अतः विद्यालय एक प्रबंधन तंत्र की तरह कार्य करता है ।

- कार्यरत व्यक्तियों के मध्य संबंधों की स्थापना --विद्यालय संगठन में अधिकारी तथा कर्मचारी सभी प्रकार के लोग कार्य करते हैं ।अतः उनके कार्य को व्यवस्थित तरीके से संपन्न कराने के लिए सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के बीच के संबंधों में समन्वय तथा सहभागिता होना अति आवश्यक है।

- यांत्रिक तथा मानवीय दृष्टिकोण -- विद्यालय संगठन की प्रकृति के संबंध में दो धारणा हैं -- १.यांत्रिक धारणा -- इसके अनुसार विद्यालय संगठन का औपचारिक डिजाइन है जिसे विशेषज्ञों द्वारा बनाया गया है ।विद्यालय संगठन का यह दृष्टिकोण संगठन को एक मशीन की भांति मानता है ।इसमें भी विद्यालय संगठन की अपनी कोई इच्छा नहीं होती ।वह संगठन के नियमों के अनुसार चलता है ।मानवीय दृष्टिकोण से विद्यालय संगठन बनाते समय व्यक्तिगत ,मानवीय प्रेरणा, तथा अनौपचारिक सामूहिक कार्य संचालन पर अत्यधिक बल दिया जाता है । इसमें मानवीय मूल्यों तथा पक्षों को भी ध्यान में रखा जाता है।

- अधिकार एवं दायित्वों का निर्धारण -- संगठन के लक्ष्य को पूरा करने के अनुसार अधिकारों एवं दायित्वों के बीच सामंजस्य होना आवश्यक है। संगठन के उच्च स्तरीय मध्य स्तर तथा निम्न स्तर के प्रबंधकों का कार्यक्षेत्र अलग अलग होता है ।अतः इनका आवश्यकता अनुसार पर्याप्त मात्रा में दायित्व तथा अधिकार बांटा होना चाहिए । अधिकारियों को भी ध्यान में रखना चाहिए बिना दायित्व के अधिकार सौंपने से अधिकारों के दुरुपयोग होने की संभावना रहती है तथा बिना प्राप्त अधिकारों के दायित्वों को पूरा करना कठिन होता है। अतः दोनों तत्वों पर ध्यान देना आवश्यक है।

- श्रम विभाजन -- संस्था के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न व्यक्तियों के मध्य कार्य का विभाजन किया जाता है ।श्रम विभाजन के अंतर्गत कार्यों को छोटे-छोटे भागों में बांट दिया जाता है ।जो व्यक्ति जिस कार्य को करने में दक्ष है उसे वह कार्य सौंपा जाता है। इस प्रकार श्रम विभाजन से संगठन में विशिष्टकरण को बढ़ावा मिलता है।

- समुचित प्रशिक्षण-- विद्यालय संगठन को प्रभावी तरीके से चलाने के लिए समय-समय नवाचार क्रियाओं के अनुसार शिक्षकों तथा कर्मचारियों का प्रशिक्षण होना आवश्यक होता है ताकि विद्यालय संगठन को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके। अतः यह एक विशिष्ट गुण है।

अतः विद्यालय संगठन का संबंध विद्यालय में उपलब्ध सभी मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के समन्वय ,उपयोग तथा व्यवस्थाओं से संबंधित होता है जो उद्देश्यों को हासिल करने में सहायता प्रदान करता है। विद्यालय संगठन विद्यालय में उपलब्ध सभी तत्वों को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करता है तथा शिक्षा के द्वारा बच्चों को नए नए जीवन आदर्शों तथा राष्ट्र विकास में अपना योगदान देता है।